IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव (छिन्दवाड़ा जिले के सन्दर्भ में)

षोधार्थी – सबीना बानों राईन पीएच.डी., देवी अहिल्या विष्वविद्यालय इन्दौर

निर्देषक – डॉ.सूर्य प्रकाष त्रिपाठी, देवी अहिल्या विष्वविद्यालय इन्दौर

सह–निर्देषक – डॉ.सखाराम मुजाल्दे, देवी अहिल्या विष्वविद्यालय इन्दौर

सारांषः–प्रस्तुत षोध–प्रपत्र मध्यप्रदेष के छिन्दवाड़ा जिले के तामिया विकास खण्ड के अन्तर्गत पातालकोट क्षेत्र के 12 गाँव में निवास कर रही विषेष आदिवासी जनजाति भारिया व गोंड पर आधारित है। प्रस्तुत विषय को चुनने का मुख्य उद्देष्य पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना हैं। क्योंकि यह जनजाति प्रायः षहरी सभ्यता से बहुत दूर गहन जंगलों के अंधेरे कोने में छोटी–बड़ी पर्वत श्रेणियों में उनकी तलहटियों में तथा पठारी क्षेत्रों जैसे दुर्लभ जगहों में जीवन निर्वाह कर रहीं है। पातालकोट क्षेत्र की अत्याधिक पिछड़ी आदिवासी जनजाति है। जबकि पातालकोट क्षेत्र अपार प्रकृति सम्पदाओं से भरा हुआ हैं। षोधार्थी द्वारा अवलोकन के माध्यम से इस जनजाति के पिछड़ेपन के कारणों एवं इनके रीति–रिवाज, प्रथायें परम्परायें, यह लोग जंगल और पुरानी तकनीक वाली कृषि से अपनी आर्थिक आवष्यकाताओं को पूरा कर अपना जीवन–यापन कर रहे हैं आदिवासी जनजाति अपने जंगल में ही खुष हैं। अपनी बुनियादी जरूरतों के सामान घर में ही मिल जाते थे सिवाय (किरोसिन तेल, हल्दी, नमक, बर्तन बांस के बने दौरा, सूप, नहाने और कपड़े धोने का सबुन,) इत्यादि इनको खरीदने के लिए जरूरी नहीं था के साप्ताहिक हाट ही जाकर लाया जाये गाँव में ही अब कुछ विषेष व्यक्ति द्वारा पहुँचाया जाता है इस हाट बाजार में रूपये के बदले मक्का, धान, कोदो कुटकी, पषु धन का ही अदला–बदली करते हैं आदिवासी जनजातियों के सम्पूर्ण आर्थिक मूल्यों को बताने प्रयास किया गया है। जिसने पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत कम हुआ हैं। वे अपना जीवन पहले की तरह जी रहे हैं लेकिन कोरोना महामारी एक जान लेवा संक्रमण हैं इसलिए बाहरी लागों से दूरी बना लिए हैं अपने ही गाँव में कृषि कर जीवन–यापन कर रहे हैं। सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी गई, 5 किलो चावल, 1 किलो दाल, 1 किलो, षक्कर, 1 किलो तेल 1 किलो नमक, इत्यादि आवश्यक सामग्री प्रदान की गई हैं। कोरोना महामारी से सुरक्षित रहे घर में रहे और अपने आदिवासी जनजाति को इस कोरोना महामारी से जागरूक करे। कोरोना महामारी के कारण आर्थिक जीवन प्रभावित हुआ हैं। इन आदिवासियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव से होने वाली आर्थिक आवष्यकताओं में कोई कमी नहीं हुई। इसके लिए सरकारी सहायता प्राप्त हो रही पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव पर मुख्य दृष्टिकोण डाला गया हैं। इसमें हमारे द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक समंकों का संकलन किया गया है।

परिचयः—पातालकोट में 12 गाँव समाये हुए हैं ये गाँव पूर्ण रूप से जीवित गाँव हैं। इस गाँव के व्यक्तियों का जीवन भी हमारी तरह जी रहे हैं। बाहरी दुनिया का यहाँ के लोगों से संपर्क हुए ज्यादा समय नहीं हुआ है, इसमें से कई गाँव ऐसे हैं, जहाँ आज भी पहुँचना बहुत मुष्किल हैं,जमीन से काफी नीचे होने और विषाल पहाड़ियों से घिरे होने के कारण इसके कई हिस्सों में जहाँ सूरज की रौषनी प्रातः 9 बजे के पूर्व नहीं होते थे उसी प्रकार सूर्यास्त भी 4 बजे के करीब हो जाता था। बहुत देर से और बहुत कम पहुँचती है, मानसून में बादल पूरी घाटी को ढक लेते हैं और बादल यहाँ तैरते हुए नजर आते है। इन सब को देख सुन कर लगता है कि मानो धरती के भीतर बसी यह एक अलग ही दुनिया हो। यह लोग हमारी ही तरह जीवन जी रहे हैं। यह के लोग भारिया और गोंड आदिवासी समुदाय के हैं, जो अभी भी हमारे पुरखों की तरह अपने आप को पूरी तरह से प्रकृति से जोड़े हुए हैं। मुनाफा आधारित व्यवस्था और दमघोंटू प्रतियोगिताओं से दूर इनकी जरूरतें सीमित हैं।

छिन्दवाड़ा, बैतुल, पचमढ़ी के धने जंगलों में जा कर छुप गये। इनके साथ चल रहे भारवाहक भी पातालकोट के अगम्य निर्जन जंगल में जा घुसे। कालान्तर में इन भारवाहक ने इसी क्षेत्र में रहकर अपना जीवन यापन करना प्रारंभ किया। फलतः इस आबादी को उनके पूर्व के व्यवसाय भारवाहक में जोड़कर ही इन्हें भारिया कहा गया है। भारिया की आबादी हर्रई के घने जंगलों तक ही है। जो इस तथ्य को पुष्टी करता है। कि इसके पूर्वज रघुजी भोंसले के साथ आये हुए भारवाहक थे। डॉ॰ रसेल और हीरालाल के मतानुसार भारिया लोगों की मान्यता है कि उनका मूल स्थान महोबा अथवा बांधोगढ़ रहा है जो भार क्षेत्र के अन्तगर्त आते हैं। ठाहल के तत्कालीन राजा कर्णदेव भी भार जाति का भी आव्रजन हुआ होगा जो संभवतः 1040 ई॰ से 1080 ई॰ के बीच माना जाता हैं। अभी तक घर नहीं लौटे। वे वनवासी हो गये। तब से गोंड/भारिया आदिवासी पातालकोट में जीवन बिता रहे है। भारिया और गोंडो का अंतसंबंध प्राचीन समय से रहा है। भारिया गोंडो को अपना बड़ा भाई मानते हैं और गोंडो की विधवा से रीति के अनुसार पुनर्विवाह करने का पहला हक मानते है। गोंड भारिया के संबंध में मिथ कथाएं प्रचलित है। इन कथाओं में भारिया की उत्पत्ति का भी पता चलता है।

पातालकोट में प्राकृतिकः— संसाधनों के साथ इनका रिष्ता पुरातन सह—अस्तित्व का है और अपनी संस्कृति, परम्परा, जिंदगी जीना सीख लिया है। आपसी व्यवहार के तरीके को भी इन्होंने काफी हद तक बिलकुल सहज सरल और निष्च्छल हमेसा अपनी दुनिया में खोये हुए हैं अगर उनके रहन—सहन, खान—पान, दवा—दारू की बात करें, तो इस मामले में भी वे अभी भी काफी पुरानी दुनिया के पुराने प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं प्राकृतिक संसाधनों पर लेकिन इधर बाहरी दुनिया से संपर्क और सदियों से उनके द्वारा संजोकर रखा गया। पेड़—पौधे कम हो जायेगे। जिसके कारण आदिवासी जनजाति का भविष्य खतरे में पड़ सकता हैं। आदिवासी जनजातियों का जीवन प्रकृतिक वन सम्पदा पर आश्रित हैं पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत ही कम हुआ हैं। ये आदिवासी जनजातियों सीमित आवष्यकता होने के कारण ये बाहरी लोगों के सम्पर्क से काफी दूर हैं इसलिए कोरोना महामारी से अपने आप को सुरक्षा कर रहे हैं पर्यावरण सम्पदा के कारण अपनी मूलभूत जरूरत को पूरा कर लेते हैं। हमे इनकी प्रकृतिक वन सम्पदा को विनाष से बचाना हैं। सरकार इन क्षेत्र पर विकास करे इस पर ध्यान देना हैं।

आर्थिक स्थिति :—भारिया आटे में महुआ मिलाकर रोटी अथवा सुवारी बनाते है। वैसे ही जैसे कि हम लोग तेल में तलकर पुरिया बनाते हैं। उनके भोजन में कुटकी व मक्के की रोटिया को प्रमुख्य स्थान प्राप्त है। 2. इसके अलावा वे आम की गुठली के अंदर पाए जाने वाले बीज के आटे की रोटी भी खाते है इसके लिए उन्हें पहले गुठली का टोटरापन निकालने की खातिर उसे पानी में ठीक तरह से धोना पड़ता है। पातालकोट में भातकंद नाम का एक कंद

पाया जाता हैं वे इस कंद को जमीन से उखाड़कर गर्म राख में गड़ा देते है जब वह पक जाता है। या उनकी भाषा में चुड़ जाता है। तब उसे एक सिरे से पकड़कर खाने वाली थाली या दूसरे बर्तन में जाकर जोर से हिला देते हैं तो उसमें से चावल के पके हुये दानों जैसे कण निकल पड़ते हैं एक कंद से ही थाली भर भात मिल जाता हैं इस तरह जननी धरती माता उन्हें भर–पेट भात मुहैया कराती हैं भारिया बैंवर कुटकी भी खाते है। इनके घर कच्ची मिट्टी, घास–भूस, व गुफा के अन्दर बने हैं

कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभावः–

1. आदिवासी जनजाति अछूत होने के कारण इनका जीवन कठिनाई से भरा हैं
2. बाहरी दुनिया से दूर होने के कारण बिजली, पानी, रोजगार नहीं, कृतिम खेती उम्पादन में कठिनाई कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव नहीं पड़ा।
3. स्वास्थ्य और षिक्षा में कमी, विधार्थीयों को उच्च षिक्षा प्राप्त करने में कठिनाईयों का सामना कर रहे थे और कोरोना महामारी में सब बंद हो गया।
4. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव इन आदिवासी जनजाति पर नहीं दिखा।
5. खेती से प्राप्त उत्पादन को बेचने में समस्यों का होना, पशु पालन में समस्या महामारी का प्रकोप नाम मात्र भी नहीं।
6. बैंक गाँव में नहीं होने पर सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलना कोरोना महामारी के समय सरकारी लाभ नहीं मिल सका।
7. गाँव में रोजगार नहीं होने पर षहर की और पलायन करना पड़ता लेकिन कोरोना महामारी के कारण अपने घ्यर वापिस आ गये।
8. आदिवासी जनजातियों कोरोना महामारी के कारण कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

साहित्य समीक्षा का अध्ययन –:

राजपूत उदय सिंह (2008) "शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में यह बताया कि, गरीबी, बीमारी भुखमरी, बेरोजगारी और पलायन की मार झेल रहे आदिवासी समुदाय के लिये राष्ट्रीय ग्रामीण गारण्टी योजना एक सहारा बनकर उभरी है, उल्लेखनीय है कि, मध्यप्रदेश की 20.3 प्रतिशत जनसंख्या आदिवासी समुदाय है, जो अनेक समस्याओं का सामना करते हुए अभावपूर्व जीवन जी रहे हैं। रोटी के अभाव में भूखे पेट सोना, इलाज के अभाव में अकाल ही काल की गोद में समा जाना आदिवासी क्षेत्रों की कड़वी सच्चाई है।"

डॉ. षेन्डे नारायण टुकाराम (2016) ''पातालकोट वानिकी सम्पदा से सम्पन्न क्षेत्र है। भौगोलिक संरचना की दुर्गमता के कारण यहाँ पर उपलब्ध वानिकी सम्पदा का दोहन सम्भव नहीं है। अधिकांष कृषि क्षेत्र बंजर, पथरीली भूमि का है। कहीं कहीं तराई में काली उपजाऊ भूमि है। प्रमुख फसलों में मक्का, कोदो, कुटकी, गेंहू, चना आदि की फसलें कुछ वर्ष पहले से बोई जाने लगी है। मजदूरी करना, वनोपज एवं पषुपालन आर्थिक जीवन के प्रमुख स्त्रोत है। बाबजूद इससे इनका आर्थिक जीवन तंगी वाला है। भूमि कम उपजाऊ है, खेती वर्षा पर निर्भर है, सिंचाई साधनों नहीं है, सरकार द्वारा जंगलों के उपभोग पर पूर्णतः प्रतिबंध, इनके आर्थिक समस्याओं के कारण है। यहाँ के शत–प्रतिषत भारिया गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन कर रहे है। ये हस्तषिल्प के क्षेत्र में अत्यंत पिछड़ी है।''

डॉ.बाविसटाले ओमकार (2017) ''भारिया जनजाति की स्त्रियों को षिक्षित करना चाहिए जिसमें इनका सामाजिक व मानसिक विकास हो सकेगा। भारिया जनजाति की स्त्रियों को गृह उद्योग व विभिन्न हस्त कलाओं का प्रषिक्षण देना चाहिए साथ ही साथ इन्हें हस्तषिल्प संबंधी कच्चा माल उपलब्ध कराना चाहिए जिससे हस्तषिल्प कर सके। इसके साथ ही उन्हें बाजार व्यवस्था भी उपलब्ध कराने से उनकी आर्थिक स्थिति में विकास होगा आंवला, हर्रा, अचार, के वृक्षों की काफी तदाद् को देखते हुए बाजार की समुचित व्यवस्था करना आवष्यक है तथा समितियों के द्वारा लघु वनोपजो क्रय–विक्रय एवं भंडार किया जाना उनके विकास के लिए हितकारी होगा। लोक कला एवं सांस्कृति विकास को संरक्षित करने के उद्देष्य से लोक कला केन्द्र पाताल कोट क्षेत्र में स्थापित किया जाना उचित होगा। इससें आदिवासियों की आर्थिक चुनौतियां कम होगी और विकास होगा।''

अध्ययन के उद्देष्य–:

- पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव का अध्ययन करना।
- पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव समस्या का अध्ययन

षोध की परिकल्पना–:

- पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव कम हो।
- पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव समस्याओं को दूर करने का प्रयास करना हैं।

षोध प्रविधि :– अध्ययन क्षेत्र में चुनी हुई प्रतिनिधि इकाईयों का चयन किया जाना निदर्षन कहलाता हैं। प्रस्तुत अध्ययन में उद्देष्यपूर्ण निदर्षन प्रणाली का उपयोग किया है। पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव का अध्ययन लाभांवित हुए व्यक्तियों को उत्तरदाता के रुप में दैव निदर्षन द्वारा चुना जाना है। पातालकोट की कुल जनसंख्या 2012 हैं। इस प्रकार पातालकोट घाटी के अर्न्तगत आने वाली 12 गाँव में से 02 गाँव चयन कर प्रत्येक गाँव से 25–25 उत्तरदाता लोगों का चयन किया जाना है। इस प्रकार अध्ययन हेतु कुल 50 लोंगो का चुनाव किया जायेगा।

समंकों का संकलन –: अध्ययन में समंकों का संकलन महत्पूर्ण होता हैं जो कि विष्लेषण कार्य को पूर्ण करते है। प्रस्तुत षोध हेतु प्राथमिक समंकों का संकलन किया है। प्राथमिक समंकों का संकलन स्वयं उपस्थित होकर साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से ऑकड़ो का संकलन का विष्लेषण किया हैं

संकलित समंको का विष्लेषण

प्राथमिक आँकड़ों का विष्लेषण के अनुसार

तालिका कमांक 1 – उत्तरदाताओं की परिवार के स्वरुप की स्थिति

परिवार का स्वरुप	उत्तरदाताओं की संख्याा	प्रतिशत
एकल परिवार	31	62.0

संयुक्त परिवार	19	38.0
योग	50	100.0

स्त्रोतः–सर्वेक्षण पर आधारित

आरेख क्रमांक 1 उत्तरदाताओं की परिवार के स्वरुप की स्थिति

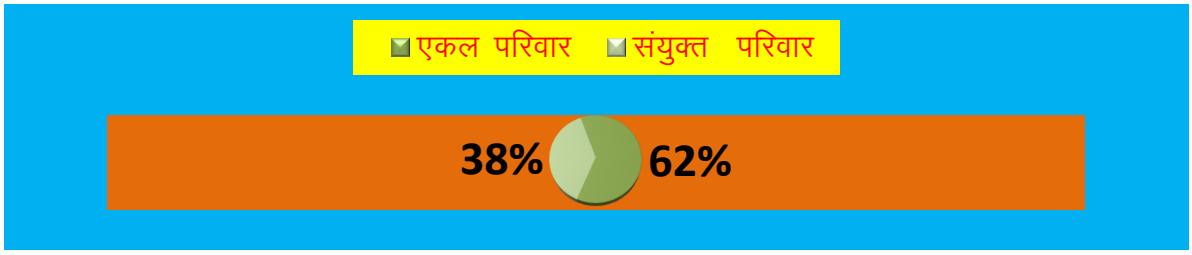

उपरोक्त प्रस्तुत तालिका 1 में पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव के परिवार के स्वरूप संबंधित जानकारी दी गई हैं। प्राथमिक ऑकड़ों का विष्लेषण तालिका से स्पप्ट होता हैं। कि एकल परिवार वाली सदस्यों का 62.0 प्रतिषत हैं। जबकि संयुक्त परिवार सदस्यों का 38.0 प्रतिषत हैं अतः एकल परिवार का 62.0 प्रतिषत सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का पुराने ख्याल नहीं छोटा परिवार सुखी परिवार हैं। एकल परिवार वाली सदस्यों का 62.0 प्रतिषत हैं। सबसे कम सदस्यों का इसलिये घर व सम्पत्ति से जुड़ी हैं।

तालिका :– क्रमांक 2 उत्तरदाताओं की प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं

प्रतिदिन कार्य के घन्टे	उत्तरदाताओं की संख्याा	प्रतिशत
4 घन्टे से कम	9	18.0
4 से 6 घन्टे	11	22.0
6 से 8 घन्टे	12	24.0
8 से अधिक घन्टे	18	36.0
योग	50	100.0

स्त्रोतः–सर्वेक्षण पर आधारित

आरेख क्रमांक 2 प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं

उपरोक्त प्रस्तुत तालिका 2 में पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत ही कम हुआ हैं श्रमिकों की आर्थिक स्थिति का अध्ययन से संबंधित जानकारी दी गई हैं। प्राथमिक आँकड़ों का विष्लेषण तालिका से स्पष्ट होता हैं। कि 4 घन्टे से कम प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं सदस्यों का 18.0 प्रतिषत हैं। 4 से 6 घन्टे प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं सदस्यों का 22.0 प्रतिषत 6 से 8 घन्टे प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं सदस्यों का 24.0 प्रतिषत हैं 8 से अधिक घन्टे से अधिक प्रतिदिन कितनी मजदूरी सदस्यों का 36.0 प्रतिषत हैं जबकि हैं 8 से अधिक घन्टे से अधिक प्रतिदिन कितनी मजदूरी सदस्यों का 36.0 प्रतिषत सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का गाँव में होने के परिवार व घर का ध्यान भी रखते हैं। 4 घन्टे से कम प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं वाली सदस्यों का 18.0 प्रतिषत सबसे कम हैं क्योंकि सदस्यों का गाँव में पुरानी प्रथा को भी ध्यान कुछ लोग रखते हैं।

तालिका क्रमांक 3 उत्तरदाताओं की आप किस प्रकार की खेती पर कार्य करने की जानकारी

खेती पर कार्य	उत्तरदाताओं की संख्याा	प्रतिशत
स्वयं की खेती पर	6	12.0
बटाई की	8	16.0
खेती पर	17	34.0
कृषि मजदूरी की खेती पर	19	38.0
योग	50	100.0

स्त्रोतः–सर्वेक्षण पर आधारित

आरेख क्रमांक 3 उत्तरदाताओं की आप किस प्रकार की खेती पर कार्य जानकारी

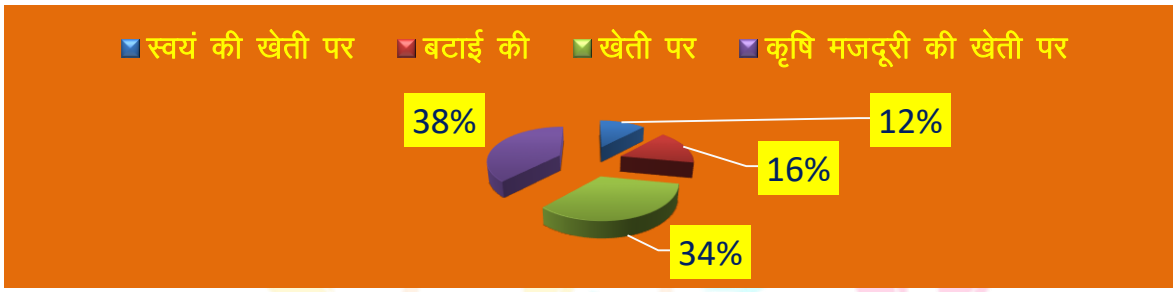

उपरोक्त प्रस्तुत तालिका 3 में पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव का अध्ययन में आप किस प्रकार की खेती पर कार्य करते हैं जानकारी द्वारा संबंधित जानकारी दी गई हैं। प्राथमिक ऑकड़ों का विष्लेषण तालिका से स्पष्ट होता हैं। कि स्वयं की खेती पर खेती पर कार्य करने वाली सदस्यों का 12.0 प्रतिषत हैं। बटाई की खेती पर कार्य करने महिलाऐं 16.0 प्रतिषत हैं खेती पर कार्य करने वाली सदस्यों का 34.0 प्रतिषत हैं। कृषि मजदूरी की खेती पर कार्य करने सदस्यों का 38.0 प्रतिषत हैं अतः कृषि मजदूरी की खेती पर कार्य करने सदस्यों का 38.0 प्रतिषत सदस्यों का सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का कृषि खेत खुद का या पुर्वज की होती हैं। स्वयं की खेती पर कार्य करने वाली सदस्यों का 12.0 प्रतिषत सबसे कम स्वयं की खेती कार्य करती हैं। क्योंकि सदस्यों का घर तक ही सीमित होते हैं।

तालिका क्रमांक 4 – उत्तरदाताओं पर कोरोना महामारी के प्रभाव की स्थिति

कोरोना महामारी के प्रभावित हुआ	उत्तरदाताओं की संख्याा	प्रतिशत
गैलडुब्बा गाँव	0	0
रातेड़ गाँव	0	0
कुल	50	100

स्त्रोतः–सर्वेक्षण पर आधारित

आरेख क्रमांक 4 उत्तरदाताओं की कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव की जानकारी

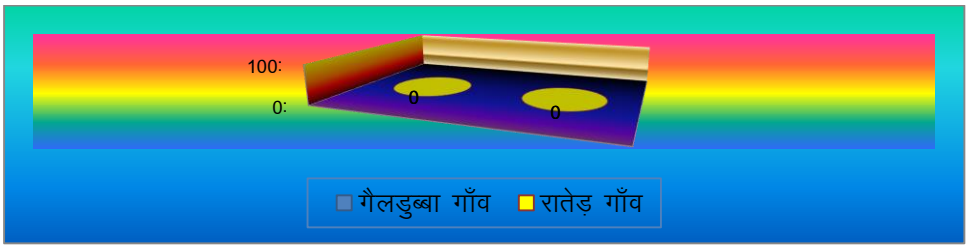

उपरोक्त प्रस्तुत तालिका 4 में पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव के परिवार के स्वरूप संबंधित जानकारी दी गई हैं। प्राथमिक ऑकड़ों का विष्लेषण तालिका से स्पष्ट होता हैं। कि

गैलडुब्बा गाँव के सदस्यों का 0 प्रतिषत हैं। जबकि रातेड़ गाँव के सदस्यों का 0 प्रतिषत हैं अतः दोनों ही गाँव में कोरोना महामारी का कोई प्राभाव नहीं हुआ है। सदस्यों के पुराने ख्याल और प्राकृतिक से जुड़े होने के कारण यहाँ के आदिवासी सुरक्षित हैं।

कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव की समस्याः–

1. पातालकोट के आदिवासी जनजाति के बच्चों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं हैं षिक्षा के नाम में प्राथमिक कक्षा तक ही आगे की पढ़ाई के लिए षहर का रूक करना पड़ता है। लेकिन कोरोना महामारी ने इन बच्चों को स्कूल भी बंद करा दिया।
2. कोरोना महामारी के कारण आंगनवाड़ी, स्वास्थ्य केन्द्र बंद हो गये।
3. कोरोना महामारी के कारण बस, गाड़ी, ट्रेन, बंद होने के कारण बाहर मजदूरी करने वाले मजदूरो को पैदल चल कर कई किलो मीटर के बाद अपने घर भी नहीं आ सके पंन्द्रह दिनों के लिए गाँव से बाहर रहना पड़ा।
4. कोरोना महामारी के कारण बाहरी खादय सामग्री में कमी आयी हैं. साबुन, खाने का तेल, मिट्टी का तेल, कपड़े, चपल–जूता, मचिस, इत्यादि आवष्यक सामग्री में प्रभाव पड़ा है।

सुझावः–

1. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव से बचे।
2. कोरोना महामारी को रोकने के लिए गाँव में बाहरी लोगों को नहीं आने देना चाहिए।
3. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव को कम करने के लिए सरकार द्वारा सुविधा देकर इनकी सारी समस्याओं का समाधान किया जा सकता हैं।
4. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव को रोकने के लिए किसी भी बाहरी व्यक्ति से दूरी बानये और माक्स पहने।
5. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव को बहुत ही कम हो इसके लिए अपने हाथ को बार–बार धोये।
6. छींकते और खांसते समय अपने हाथ व कपड़े का प्रयोग करे।
7. पातालकोट के आदिवासी के बच्चों को षिक्षा की व्यवस्था की जाये ओनलाइन पढ़ाई हो।
8. कोरोना महामारी के समय आदिवासी जनजाति को योजनाओं का लाभ पहुँच जाये इस पर अधिक ध्यान दिया हैं।
9. इनकी कोरोना महामारी प्रभावों को दूर करने के लिए संचार साधनों, पक्की सड़क, रोजगार, पक्के घर, षौचालय, षिक्षा, अस्पताल, आँगनवाड़ी, की आवश्यकता हैं। षिक्षा प्राप्त हो ताकि महिलाये समाज में उच्च स्थान हासिल हो और बीमारी से बचे।
10. रोजगार प्राप्त हो ताकि महिलाये गरीब न हो
11. चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो ताकि महिलाये स्वास्थ्य रहे
12. स्कूल में निःषुल्क बच्चे महिलाये के पढ़ाई करे ताकि देष बड़े
13. कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव के दौरान निःषुल्क प्रषिक्षण प्राप्त हो ताकि व्यवसाय में तरक्की हो और अपना जीवन–यापन आसानी से कर सके।
14. कोरोना महामारी के समय इन आदिवासी लोगों को ओनलाइन ई बैंक की से ऋण की सुविधा प्राप्त हो जिससे देष विषाल उघोगिक क्षेत्र बनने में सक्षम हो।
15. पक्के मकान प्राप्त हो ताकि महिला सुरक्षित रहे बीमारी बचे।
16. कम ब्याज दर में ऋण प्राप्त हो ताकि महिला सषक्त हो और कृषि कार्य आसानी से कर सके।

17. पुरूषों की तुलना में महिलाओं को अधिक मजदूरी प्राप्त हो
18. गाँव में लघु व कुटीर उद्योग खोल कर बेरोजगारी खत्म करना हैं
19. समाज में महिलाओं को सुक्षित स्थान प्राप्त हो

निष्कर्ष–:पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत कम हुआ हैं। वे अपना जीवन पहले की तरह जी रहे हैं लेकिन कोरोना महामारी एक जान लेवा संक्रमण हैं इसलिए बाहरी लागों से दूरी बना लिए हैं अपने ही गाँव में कृषि कर जीवन–यापन कर रहे हैं। सरकार द्वारा आर्थिक सहायता दी गई, 5 किलो चावल,1 किलो दाल,1 किलो, षक्कर,1 किलो तेल 1 किलो नमक, इत्यादि आवश्यक सामग्री प्रदान की गई हैं। कोरोना महामारी से सुरक्षित रहे घर में रहे और अपने आदिवासी जनजाति को इस कोरोना महामारी से जागरूक करे। कोरोना महामारी के कारण आर्थिक जीवन प्रभावित हुआ हैं। इन आदिवासियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव से होने वाली आर्थिक आवष्यकताओं में कोई कमी नहीं हुई। इसके लिए सरकारी सहायता प्राप्त हो रही पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव पर मुख्य दृष्टिकोण डाला गया हैं। इसमें हमारे द्वारा प्राथमिक समंकों का संकलन किया गया है।

1. कोरोना महामारी से इन आदिवासियों पर कोई प्राभव नहीं पड़ा। अतः एकल परिवार का 62.0 प्रतिषत सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का पुराने ख्याल नहीं छोटा परिवार सुखी परिवार हैं। एकल परिवार वाली सदस्यों का 62.0 प्रतिषत हैं। सबसे कम सदस्यों का इसलिये घर व सम्पत्ति से जुड़ी हैं।
2. कोरोना महामारी से इन आदिवासियों पर कोई प्राभव नहीं पड़ा। जबकि हैं 8 से अधिक घन्टे से अधिक प्रतिदिन कितनी मजदूरी सदस्यों का 36.0 प्रतिषत सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का गाँव में होने के परिवार व घर का ध्यान भी रखते हैं। 4 घन्टे से कम प्रतिदिन कितने घन्टे कार्य करते हैं वाली सदस्यों का 18.0 प्रतिषत सबसे कम हैं क्योंकि सदस्यों का गाँव में पुरानी प्रथा को भी ध्यान कुछ लोग रखते हैं।
3. कोरोना महामारी से इन आदिवासियों पर कोई प्राभव नहीं पड़ा। अतः कृषि मजदूरी की खेती पर कार्य करने सदस्यों का 38.0 प्रतिषत सदस्यों का सर्वाधिक क्योंकि सदस्यों का कृषि खेत खुद का या पूर्वज की होती हैं। स्वयं की खेती पर कार्य करने वाली सदस्यों का 12.0 प्रतिषत सबसे कम स्वयं की खेती कार्य करती हैं। क्योंकि सदस्यों का घर तक ही सीमित होते हैं।
4. पातालकोट क्षेत्र के आदिवासी जनजातियों पर कोरोना महामारी का आर्थिक प्रभाव बहुत कम हुआ हैं। इनकी आवष्यकताये सीमित हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. राजपूत उदय सिंह(2008) "आदिवासियों का सहरा राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी योजना, वर्ष " पृष्ट सं. 28–29
2. डॉ. षेन्डे नारायण टुकाराम(2016)''भारिया आदिम जनजाति का एक सामाजिक–सांस्कृतिक अध्ययन "दीप्ति सिंह ज्योंति सिंह'' षोधार्थी राजनीति विज्ञान विभाग बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर विष्वविधालय लखनऊ इलाहबाद
3. डॉ. बाविसटालेओमकार (2017) ''एप्लाइट और यूनिवर्सल रिसर्च इंटरनेषनल **www.ijaur.com**''
4. इंटरनेट, पत्रिका, षोध पत्र